कक्षा- ग्यारहवीं, वषय- हिन्दी (केंद्रिक)

पाठ्यपुस्तक- आरोह (भाग-1)

काव्य–खण्ड(अध्याय-4)

क वता – वे आंखे (सु मत्रानंदन पंत)

प्रस्तुतकर्ता

म थलेश कुमार झा

पऊके व-4 रावतभाटा

क व-परिचय (सु मत्रानंदन पंत)

- मूल नाम – सु मत्रानंदन पंत का मूल नाम गोसांई दत्त है ।
- जन्म – पंतजी का जन्म सन **1900** में गांव कौसानी , जिला अल्मोड़ा ,उत्तरांचल में हुआ था ।
- शक्षा – इनकी प्रारम्भिक शक्षा कौसानी में तथा उच्च शक्षा बनारस और इलाहाबाद में हुई ।
- प्रमुख रचनाएं –वीणा, ग्रं थ ,पल्लव, गुंजन, युगवाणी, ग्राम्या, चदेम्बरा, उत्तरा,
- स्वर्ण- करण, कला और बूढा चांद, लोकायतन आदि इनकी प्रमुख काव्य-कृतियां हैं।
- सम्मान – 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' , 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' , 'सो वयत लैंड नेहरू पुरस्कार' तथा 'पद्मभूषण पुरस्कार' से इन्हें सम्मानित कया गया ।
- सम्पादन – उन्होंने 'रूपाभ' पत्रिका का सम्पादन कया ।
- वशेषता- पंतजी छायावाद के श्रेष्ठ क व हैं । प्रकृति- चत्रण के अद्भुत रचनाकार होने के कारण इन्हें प्रकृति का सुकुमार क व कहा जाता है ।
- मृत्यु- **1977** में पंत जी का निधन हो गया ।

- क वता का मूल –भाव
- प्रगतिवादी वचारधारा से प्रभा वत 'वे आंखे' क वता वर्षों से शोषण का शकार होते कसानों की दयनीय स्थिति का वर्णन करती है जिसमें स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरांत भी कोई वशेष परिवर्तन दिखाई नहीं दिया।
- कसान का व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन दोनों इस समस्या से त्रस्त हैं। यह क वता वकास की इसी कथनी एवं करनी के भेद पर करारा व्यंग्य है ।

क वता का सारांश

- इस क वता में क व ने स्वतन्त्रता से पूर्व कसानो की दुर्दशा का चत्रण कया है। कसान की आंखे सदा दुख और दीनता से भरी रहती हैं । कभी वह स्वाधीन थी । उसे उसकी जमीन से बेदखल कर दिया गया ।
- महाजन ने क्रूरतापूर्वक उसके पुत्र को मरवा डाला । उसके घर-दवीर बिकवा डाले । खेत तक नीलाम करवा डाले ।ब्याज के लए उसने सब अत्याचार कए। उसकी पत्नी बिना दवा के मर गई और दुधमुही बेटी दूध के अभाव में चल बसी ।
- उसकी पुत्रवधू को 'पति घातिनी' होने का कलंक मला ।एक दिन उसे भी थानेदार ने बुलवा भेजा । अगले दिन वह कुएं में डूबकर मर गयी । इन सब अत्याचारों की याद कर–करके कसान की छाती फट जाती है ।

“वे आंखें” क वता के शब्दार्थ

- **1**.गुहा=गुफा, दारूण=भयानक, दैन्य=गरीबी, नीरव=मौन, रोदन=रोना
- **2**.स्वाधीन=स्वतंत्र,मंझधार=धार मध्य,समस्याओंकेबीच,कगार= कनारा।
- **3**.दृगों में=आंखों में, बेदखल=अ धकार से वं चत, तृण=तिनका ।
- **4**.आंखों का तारा=बहुत प्यारा, कारकुन=जमींदारों के कारिंदे ।
- **5**.महाजन=ऋणदाता, आंखोंमेंचुभना=बुरा लगाना,कुर्क=नीलाम,बरधों=बैलों।
- **6**.उजरी=उजली, अह=आह, आंखों में नाचना= बार-बार सामने आना।
- **7**.दवा दर्पण=दवा पथ्य आदि, घरनी=पत्नी, दुधमुंही=नन्हीं।
- **8**.यदय प =यदि ऐसा है भी, पति घातिन=पति की हत्या करने वाली ।
- **9**.जोरू=पत्नी,सुध=याद,सांप लौटते=जलन होती,फटती छाती=अति दुख होता ।
- **10**.स्मृति=याद, शून्य=आकाश चतवन=दृष्टि , क्षण भर=पल भर।

- ‘वे आखें’ क वता की व्याख्या
- 1 अंधकार की गुहा सरीखी उन आंखों से डरता है मन,
- भरा दूर तक उनमें दारुण दैन्य दुख का नीरव रोदन !
- व्याख्या- भारतीय कसान की आंखें मुझे एक अंधेरी गुफा के समान भयानक लगती है । उसकी शून्य आंखों में देखने में भी भय लगता है । उन आंखों में भयानक गरीबी का दुख और उनका चुपचाप गरीबी को सहने का मौन रुदन व्याप्त है ।
- 2 वह स्वाधीन कसान रहा अ भमान भरा आँखों में इसका ,
- छोड़ उसे मँझधार आज संसार कगार सदृश बह खसका !
- व्याख्या- भारतीय कसान कभी स्वाधीन था । उसके पास अपने कुछ खेत थे । उसकी आँखों में स्वा भमान था । तब समाज में उसकी मान मर्यादा थी । परंतु आज उसका स्वा भमान उसे छोड़कर ऐसे वलीन हो गया है, जैसे कोई रेतीला कनारा टूट कर नदी के प्रभाव में बह जाता है ।

- **3** लहराते वे खेत दृगों में हुआ बेदखल वह अब जिनसे ,
- हँसती थी उसके जीवन की हरियाली जिनके तृन-तृन से !
- व्याख्या- कसान की आँखों में आज भी वे लहलहाते खेत झूम उठते हैं ,
- जिनसे उसे वं चत कर दिया गया है । सूदखोर सेठों ने थोड़े से ऋण के बदले उसकी सारी खेती को ह थया लया है । उन खेतों का एक-एक तिनका उसे इतना प्यारा था क उसे देखकर कसान के जीवन में मानो हरियाली छा जाती थी । उसका मन प्रसन्न हो उठता था । (पर खेत छीन लए जाने के कारण अब वह दुखी है) ।
- **4** आंखों में ही घूमा करता वह उसकी आंखों का तारा ,
- कारकुनों की लाठी से जो गया जवानी में ही जो मारा !
- व्याख्या – कसान का प्रय बेटा जवानी की ही अवस्था में साहकार के कारिंदों दवारा लाठियों के निर्मम प्रहारों से मार डाला गया । अपने प्रय बेटे की वह क्रूर हत्या आज भी उसकी आंखों के सामने प्रत्यक्ष होकर नाचने लगती है ।
- **5** बिका दिया घर दवार , महाजन ने न ब्याज की कौड़ी छोड़ी,
- रह - रह आंखों में चुभती वह कुर्क हुई बरधों की जोड़ी !
- व्याख्या- महाजन ने अपने धन और ब्याज के लए कसान की घर–संपत्ति सब नीलाम कर डाली । उसे घर से बेघर कर दिया, कन्तु अपने ऋण का ब्याज एक–एक पाई करके चुका लया । उसे कसान की दयनीय अवस्था को देखकर जरा भी दया नहीं आई । उसने उसकी प्रय बैलों की जोड़ी को भी उसके देखते–देखते नीलाम कर दिया । कसान ववश होकर उसे नीलाम होते देखता रहा, कुछ कर नहीं पाया । आज भी बैलों की नीलामी की वह स्मृति उसके मन में वेदना जगा रही है ।

- **6** उजरी उसके सवा कसे कब पास दुहाने आने देती ?
- अह , आंखों में नाचा करती उजड़ गई जो सुख की खेती **!**
- व्याख्या – कसान को उजली गाय से बहुत प्रेम था । गाय भी उससे स्नेह रखती थी । कसान की उजली गाय उसके सवाय अन्य कसी को भी अपने पास दूध दुहने के लए नहीं आने देती थी । उसकी आंखों के सामने आज भी गाये का स्नेह उमड़ पड़ता है । हाय **!** बेचारे कसान का सुखमय संसार आज उजड़ गया है ,परंतु उसे उसकी याद बरबस आती रहती है ।
- **7** बिना दवा दर्पण के घरनी स्वरग चली, आँखें आती भर ,
- देख–देख के बिना दुधमुंही बिटिया दो दिन बाद गयी मर ।
- व्याख्या – कसान की पत्नी दवा के अभाव में ही मर गयी । यह सोचकर उसकी आँखें आँसुओं से भर जाती हैं । पत्नी की मृत्यु के पश्चात दूध पर आ श्रत उसकी नन्हीं बिटिया की सम चत देखभाल नहीं हो पायी । अतः उस बेचारी की भी अकाल मृत्यु हो गयी ।
- **8** घर में वधवा रही पतोहू , लछमी थी,यदय प पति घातिन,
- पकड़ मंगाया कोतवाल ने , डूब कुएं में मरी एक दिन **!**
- व्याख्या – उस कसान के घर मे उसकी वधवा पुत्रवधू शेष बच रही थी । यदय प उसे पति की हत्या का कारण समझा जाता थी,पर अब वही इस घर की गृह-लक्ष्मी के समान थी। उसे भी एक दिन कोतवाल ने बुलवाकर अपनी वासना से भ्रष्ट कर दिया । इससे वह लाज के मारे कुएं में कूद कर मर गई । **(** कसान अकेला रह गया **)** ।

- **9** खैर , पैर की जूती ,जोरू न सही एक , दूसरी आती ,
- पर जवान लड़के की सुध कर सांप लोटते,फटती छाती **!**
- व्याख्या – पत्नी मरी , तो मरी। उसका मरना उतना कष्टकर नहीं था। कसान दूसरी पत्नी भी ला सकता था । परंतु जब उसे अपने जवान लड़के की हत्या हो जाने की याद आती है , तो उसकी छाती पर सांप लोटने लगते हैं । वेदना के मारे उसकी छाती वदीर्ण हो जाती है ।
- **10** पछले सुख की स्मृति आंखों में क्षण भर एक चमक है लाती ,
- तुरत शून्य में गड़ वह चतवन तीखी नोक सदृश बन जाती ।
- व्याख्या**-** कसान जब अपने गत सुख को याद करता है तो उसे क्षण भर के लए सुख और आनंद मलता है । उसे अपने खेत,गाय,पत्र ,पत्नी,बिटिया,पुत्रबधू की कल्पना सुख देने लगती है, कंतु जब एक–एक करके सबके नष्ट होने की याद आती है,तो वे सब स्मृतियां उसके लए दुखदायी बन जाती हैं।